4. 'असिद्ध की व्यथा' कविता का भाव एवं शिल्प-सौन्दर्य का उद्घाटन कीजिए।

5. नरेश मेहता के कृतित्व का मूल्यांकन करते हुए नयी कविता के विकास में उनके योगदान को स्पष्ट कीजिए।

6. नयी कविता की विकास यात्रा का वर्णन कीजिए।

7. भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में संवेदना और शिल्प का विवेचन कीजिए।

8. नवगीत परम्परा में बालस्वरूप राही के गीतों के योगदान का वर्णन कीजिए।

9. शमशेर बहादुर सिंह के काव्य की अन्तर्वस्तु का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

MAHD–08

June – Examination 2022

M.A. (Final) Examination

HINDI

(आधुनिक हिन्दी कविता और गीत परम्परा)

Paper : MAHD-08

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का है।

1. (i) अज्ञेय ने दूसरा सप्तक के कवियों को 'नये कवि' कहा है। 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष बताइए।

   (ii) समकालीन कविता में 'सामान्यजन की पहचान' को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

(iii) 'घिर गया है समय का रथ' कविता के रचनाकार कौन हैं ?

(iv) गिरिजाकुमार माथुर की किन्हीं **दो** काव्य कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।

(v) 'रँकटियो पर टँगे लोग' काव्य संग्रह के भावबोध को संक्षेप में लिखिए।

(vi) कर्मवीर भारती द्वारा गीतिनाट्य शैली में रचित प्रबन्ध काव्य का क्या नाम है ?

(vii) सोहनलाल द्विवेदी के गीतों का उद्देश्य क्या रहा ?

(viii) गोपालदास 'नीरज' के गीतों की लोकप्रियता के क्या कारण हैं ?

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है।

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अँधेरी सीढ़ियाँ .....
वे एक आभ्यन्तर निराले लोक की।

एक चढ़ना औ' उतरना,
पुनः चढ़ना औ' लुढ़कना,
मौच पैरों में
व छाती पर अनेकों घाव।
बुरे-अच्छे-बीच के संघर्ष
से भी उग्रतर।

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

फिर मैं
अगर अपनी माँग पर
आम के बौर की लिपि में लिखी भाषा
का ठीक-ठीक अर्थ नहीं समझ पायी
तो इसमें मेरा क्या दोष मेरे लीला-बन्धु।
आज इस निभृत एकान्त में
तुम से दूर पड़ी हूँ
और तुम क्या जानो कैसे मेरे सारे जिस्म में
आम के बौर ठीस रहे हैं
और उनकी अजीब सी तुर्श महक
तुम्हारा अजीब सा प्यार है
जो सम्पूर्णतः बाँधकर भी
सम्पूर्णतः मुक्त छोड़ देता है।